Dr. RANJEET KUMAR

Dept. of History

H.D.Jain College, Ara.

B. A. ,Semester -6 Unit- 4,(MJC-6)

ओटोमन साम्राज्य का पतन और मुस्तफ़ा कमाल पाशा के नेतृत्व में आधुनिक तुर्की का उदय

लगभग छह शताब्दियों तक तीन महाद्वीपों पर शासन करने वाला उस्मानी साम्राज्य 19वीं और 20वीं सदी के आरंभ में एक गहरे संकट का सामना कर रहा था। एक ओर आंतरिक कमज़ोरियाँ थीं, तो दूसरी ओर बाहरी शक्तियों का दबाव। इसी संकटकाल में मुस्तफ़ा कमाल अतातुर्क का उदय हुआ, जिन्होंने न केवल एक साम्राज्य के ध्वंसावशेष से एक नए राष्ट्र-राज्य — तुर्की गणराज्य — का निर्माण किया, बल्कि इसे एक आधुनिक, धर्मनिरपेक्ष और प्रगतिशील राष्ट्र के रूप में ढालने का अद्वितीय कार्य भी सम्पन्न किया। यह सारांश उस्मानी साम्राज्य के पतन के कारणों, प्रथम विश्वयुद्ध की त्रासदी, तुर्की के स्वतंत्रता संग्राम और अतातुर्क के क्रांतिकारी सुधारों की उस व्यापक गाथा को प्रस्तुत करता है, जिसने आधुनिक मध्य-पूर्व एवं विश्व के इतिहास की दिशा बदल दी।

भाग 1: उस्मानी साम्राज्य का पतन (1828–1922)

1.1 पतन के बहुआयामी कारण

उस्मानी साम्राज्य का पतन कोई एकाएक घटित घटना नहीं, बल्कि एक दीर्घकालिक ऐतिहासिक प्रक्रिया थी। 17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से ही साम्राज्य ने सैन्य, आर्थिक और प्रशासनिक चुनौतियों का सामना करना शुरू कर दिया था। पश्चिमी यूरोप में वैज्ञानिक क्रांति, औद्योगीकरण और राष्ट्र-राज्यों का उदय हुआ, जबकि उस्मानी व्यवस्था पारंपरिक ढाँचे में जकड़ी रही। रूसी साम्राज्य का विस्तार एक बड़ा खतरा बन गया, जिसने बाल्कन क्षेत्र में स्लाव जातियों को उकसाया और साम्राज्य की उत्तरी सीमाओं पर लगातार दबाव बनाया।

1.2 आधुनिकीकरण के प्रयास: तंजीमात और उससे आगे

पतन को रोकने के लिए साम्राज्य ने आधुनिकीकरण के कई प्रयास किए, जिन्हें सामूहिक रूप से "तंजीमात" (पुनर्गठन) काल (1839-1876) कहा जाता है। सुल्तान महमूद द्वितीय (1808-1839) ने 1826 में "वाक़-ए खैरिये" (शुभ घटना) के माध्यम से अव्यवस्थित और शक्तिशाली जनिसारी सेना का अंत कर एक आधुनिक नियमित सेना की नींव रखी। 1839 के गुलहाने का हत्त-ए शरीफ़ और 1856 के हत्त-ए हुमायूं जैसे फ़रमानों के द्वारा कानून की समानता, संपत्ति के अधिकार और सभी धर्मों के लोगों के लिए न्याय सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया। इन सुधारों का उद्देश्य केंद्रीकृत शासन व्यवस्था स्थापित करना, कर संग्रह में सुधार लाना और यूरोपीय शक्तियों के समक्ष साम्राज्य की स्थिति मज़बूत करना था। हालाँकि, ये सुधार अक्सर पारंपरिक ताकतों के विरोध और पश्चिमी हस्तक्षेप के कारण पूरी तरह सफल नहीं हो पाए।

1.3 राष्ट्रवाद का उदय और क्षेत्रीय हानि

19वीं सदी में यूरोप से आयातित राष्ट्रवाद की विचारधारा ने बहु-जातीय और बहु-धार्मिक उस्मानी साम्राज्य के लिए सबसे बड़ी चुनौती पैदा की। साम्राज्य के बाल्कन प्रांतों में रहने वाले यूनानियों, सर्बों, बल्गारियाई लोगों ने अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष शुरू किया। 1821-1832 का यूनानी स्वतंत्रता संग्राम सफल रहा और यूनान एक

स्वतंत्र राष्ट्र बन गया। 1877-1878 की रूस-तुर्की युद्ध (93 का युद्ध) के बाद बर्लिन कांग्रेस (1878) में सर्बिया, मोंटेनेग्रो और रोमानिया को स्वतंत्रता मिली, और बुल्गारिया को स्वायत्तता प्राप्त हुई। इन क्षेत्रों के छिन जाने से साम्राज्य न केवल क्षेत्रफल में सिकुड़ा, बल्कि उसकी आर्थिक समृद्धि और मानव-संसाधन का एक बड़ा हिस्सा भी हाथ से निकल गया।

1.4 आर्थिक पतन और बाह्य नियंत्रण

अपनी उदार व्यापार नीतियों के कारण उस्मानी साम्राज्य आर्थिक रूप से पश्चिमी शक्तियों पर निर्भर होता चला गया। 16वीं सदी से ही फ्रांस जैसे देशों के साथ हुई कैपिट्युलेशन (विशेषाधिकार) संधियों ने विदेशियों को कर-मुक्त व्यापार और अपने न्यायालय चलाने का अधिकार दे दिया था। क्रीमियाई युद्ध (1853-1856) के दौरान पहली बार बाहरी ऋण लेने के बाद साम्राज्य विदेशी ऋण के जाल में फँस गया। 1875 तक आते-आते साम्राज्य अपना ऋण चुकाने में असमर्थ हो गया और दिवालिया घोषित हो गया। इसके परिणामस्वरूप 1881 में उस्मानी सार्वजनिक ऋण प्रशासन (ओ.पी.डी.ए.) की स्थापना हुई, जो वास्तव में यूरोपीय लेनदारों के हितों की रक्षा करने वाली एक संस्था थी और साम्राज्य के महत्वपूर्ण राजस्व स्रोतों (नमक, तंबाकू, रेशम आदि) पर उसका नियंत्रण हो गया। यह साम्राज्य की आर्थिक संप्रभुता का गंभीर हनन था।

1.5 राजनीतिक विचारधाराओं का संघर्ष और साम्राज्य का अंतिम दौर

पतन के इस दौर में साम्राज्य को एकजुट रखने के लिए तीन प्रमुख विचारधाराएँ उभरीं, जिनमें आपस में प्रतिस्पर्धा चल रही थी।

· इस्लामवाद (उम्मतवाद): यह पारंपरिक विचार था कि सुल्तान-खलीफा के नेतृत्व में सभी मुसलमान एक रहें। इसके अनुसार साम्राज्य, मुसलमानों की गैर-मुसलमानों पर विजय थी, न कि केवल तुर्कों का शासन।
· उस्मानीवाद: यह 19वीं सदी का उदारवादी विचार था जिसका लक्ष्य सभी जातियों और धर्मों के लोगों को एक समान उस्मानी नागरिक बनाना था। परंतु, मुसलमानों के पारंपरिक वर्चस्व और गैर-मुस्लिम समुदायों के बढ़ते राष्ट्रवाद के कारण यह विचार असफल रहा।
· तुर्कवाद (तुर्क राष्ट्रवाद): यह एक नवीन विचार था जो मुख्यतः रूसी साम्राज्य से भागकर आए तुर्की भाषी बुद्धिजीवियों द्वारा लाया गया। इसने एक नस्लीय और भाषाई तुर्क राष्ट्र की कल्पना की। प्रथम विश्वयुद्ध और उसके बाद के वर्षों में यही विचारधारा सबसे प्रभावशाली सिद्ध हुई।

प्रथम विश्वयुद्ध (1914-1918) में केंद्रीय शक्तियों (जर्मनी, ऑस्ट्रिया-हंगरी) की तरफ से लड़ते हुए साम्राज्य की पराजय हुई। 30 अक्तूबर 1918 को हुई मुड्रोस संधि के दमनकारी शर्तों के तहत इटालियन, फ्रांसीसी, ब्रिटिश और यूनानी सेनाओं ने साम्राज्य के विभिन्न हिस्सों पर कब्ज़ा कर लिया। 13 नवंबर 1918 को संयुक्त मित्र देशों का बेड़ा इस्तांबुल के बंदरगाह में घुस आया, जो एक राष्ट्र के लिए अत्यंत अपमानजनक घटना थी। ऐसा लगने लगा था कि उस्मानी साम्राज्य का इतिहास समाप्त हो गया है और तुर्कों का भविष्य अनिश्चित है।

भाग 2: मुस्तफ़ा कमाल अतातुर्क का प्रारंभिक जीवन एवं सैन्य करियर

2.1 बचपन, शिक्षा और चरित्र निर्माण

मुस्तफ़ा कमाल का जन्म 1881 में, उस्मानी साम्राज्य के सेलोनिक (अब थेसालोनिकी, ग्रीस) शहर में एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। उस समय का सेलोनिक तुर्क, यूनानी, स्लाव, अल्बेनियन आदि का मिश्रित शहर था, जहाँ राष्ट्रवादी आंदोलन सक्रिय थे। उनके पिता अली रिज़ा एफेंदी एक साधारण सरकारी कर्मचारी थे, जो आधुनिक शिक्षा में विश्वास रखते थे। उनकी माता ज़ुबैदा हानिम एक धार्मिक महिला थीं, जो चाहती थीं कि

मुस्तफ़ा पारंपरिक मदरसे में धार्मिक शिक्षा प्राप्त करे। पिता की इच्छा के अनुसार, मुस्तफ़ा को पहले पारंपरिक मदरसे में भेजा गया, लेकिन वहाँ की रूढ़िवादी पद्धति से असंतुष्ट होकर उन्होंने विद्रोह कर दिया और अंततः उन्हें आधुनिक शम्सी एफेंदी मकतबी में दाखिल कराया गया। यहीं से उनमें आधुनिक ज्ञान-विज्ञान और तर्कशक्ति के प्रति रुचि जागृत हुई।

उनकी प्रतिभा देखकर एक गणित शिक्षक ने उन्हें "कमाल" (पूर्णता) उपनाम दिया, और इस प्रकार वे मुस्तफ़ा कमाल कहलाए। सैन्य हाई स्कूल और फिर मकतब-ए हर्बिय-ए शाहाने (सैन्य अकादमी) में उनकी शिक्षा हुई। यहीं पर उन्होंने वतन और हूरियत (मातृभूमि और स्वतंत्रता) नामक एक गुप्त क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की, जो बाद में इत्तिहाद व तरक्की (यूनियन एंड प्रोग्रेस) समिति में विलय हो गया। अकादमी से 1905 में स्नातक होकर वे सेना में कप्तान के पद पर नियुक्त हुए।

2.2 प्रथम विश्वयुद्ध में भूमिका और एक महान सेनानायक के रूप में उदय

प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान मुस्तफ़ा कमाल ने अपनी सैन्य प्रतिभा से अंतरराष्ट्रीय ख्याति अर्जित की।

· चनक्कले (गैलिपोली) की लड़ाई (1915): यह अभियान मित्र देशों की सेना द्वारा इस्तांबुल पर कब्ज़ा करने की योजना था। एनज़ाक (ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड) कोर के मजबूत हमले के समय मुस्तफ़ा कमाल ने अपनी डिवीजन को जो आदेश दिया, वह इतिहास में अमर हो गया: "मैं तुम्हें हमला करने का आदेश नहीं देता, मैं तुम्हें मरने का आदेश देता हूँ। जब तक हम मर नहीं जाते, तब तक जो समय बीतेगा उसमें दूसरे सैनिक और कमांडर आकर हमारी जगह ले सकते हैं।" उनके नेतृत्व में तुर्क सेना ने मित्र देशों की सेना को समुद्र में धकेल दिया और एक निर्णायक जीत हासिल की। इस जीत ने न केवल इस्तांबुल को बचाया, बल्कि मुस्तफ़ा कमाल को एक राष्ट्रीय नायक बना दिया।
· सीरिया-फिलिस्तीन मोर्चा (1917-1918): बाद में उन्हें सातवीं सेना और फिर यिल्दिरिम (बिजली) सेना समूह का कमांडर बनाया गया। अंततः यह मोर्चा भी हार गया, लेकिन मुस्तफ़ा कमाल ने कुशलतापूर्वक अपनी सेना को व्यवस्थित रूप से पीछे हटाया और उसे पूरी तरह नष्ट होने से बचाया। यिल्दिरिम सेना के जर्मन कमांडर लिमान वॉन सैंडर्स ने कमांड सौंपते हुए कहा, "बहुत से गौरवशाली युद्धों के नायक के रूप में जाने जाने वाले मुस्तफ़ा कमाल पाशा को मैं आज से आदेश और कमान सौंपता हूँ।"

जब प्रथम विश्वयुद्ध समाप्त हुआ और इस्तांबुल पर विदेशी बेड़े क़ब्ज़ा करने आए, तो मुस्तफ़ा कमाल उस दृश्य को देखकर अत्यंत दुखी हुए। उन्होंने अपने सहायक से कहा, "जैसे आए थे, वैसे ही चले जाएँगे!" यह वाक्य उनके दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास को दर्शाता है। मुड्रोस संधि की कठोर शर्तों को देखकर उन्होंने पहले ही अनुमान लगा लिया था कि इस्तांबुल में बैठकर देश को नहीं बचाया जा सकता। उन्होंने कहा, "इस्तांबुल में रहकर गिरफ़्तार होने की अपेक्षा मैं डूबकर मरना पसंद करूँगा।" और इस प्रकार उन्होंने अनातोलिया (एशिया माइनर) की ओर रुख किया।

भाग 3: तुर्की स्वतंत्रता संग्राम (1919-1923)

3.1 राष्ट्रीय संघर्ष की शुरुआत: सम्सुन से अमास्या तक

16 मई 1919 को मुस्तफ़ा कमाल को नौवीं सेना का निरीक्षक नियुक्त किया गया और उन्हें अनातोलिया भेजा गया। उनका आधिकारिक कार्य स्थानीय विद्रोहों को दबाना था, लेकिन उनका वास्तविक लक्ष्य एक राष्ट्रीय प्रतिरोध आंदोलन का आयोजन करना था। 19 मई 1919 को उनका सम्सुन पहुँचना, तुर्की स्वतंत्रता संग्राम की आधिकारिक शुरुआत मानी जाती है। सम्सुन और हव्ज़ा में किए गए कार्यों से ब्रिटिश और इस्तांबुल सरकार

चिंतित हो उठी और उन्हें वापस बुला लिया गया। परन्तु, मुस्तफ़ा कमाल ने वापस लौटने से इनकार कर दिया और अमास्या शहर पहुँचे।

3.2 अमास्या परिपत्र: स्वतंत्रता की घोषणा-पत्र

22 जून 1919 को जारी अमास्या परिपत्र (तमीम) वास्तव में तुर्की स्वतंत्रता संग्राम का जन्म-पत्र था। इसमें कई निर्णायक बातें कही गईं:

1. वतन की अखंडता और राष्ट्र की स्वाधीनता ख़तरे में है।
2. इस्तांबुल सरकार इस ख़तरे को दूर करने में अक्षम है।
3. राष्ट्र की स्वाधीनता केवल राष्ट्र के दृढ़ संकल्प और प्रयास से ही प्राप्त होगी।
4. इस उद्देश्य के लिए अनातोलिया के सभी प्रांतों से प्रतिनिधियों को भेजकर एक राष्ट्रीय सभा का आयोजन किया जाए।

इस परिपत्र ने स्पष्ट कर दिया कि अब संघर्ष की कमान इस्तांबुल सरकार के हाथों से निकलकर अनातोलिया के जनता और सेना के हाथों में आ गई है। मुस्तफ़ा कमाल ने इसी दस्तावेज़ में यह भी कहा, "प्यारे अमास्या वासियों! आप अब क्या देख रहे हैं? सुल्तान और सरकार मित्र देशों के हाथों में कैद हैं। मुल्क ख़त्म होने के कगार पर है।...हम दुश्मन के हमले के सामने अपने पैरों में चप्पल पहनेंगे, पहाड़ों पर चढ़ेंगे, अपनी मातृभूमि की आख़िरी चट्टान तक उसका बचाव करेंगे।"

3.3 एर्ज़ुरुम और सिवास कांग्रेस: राष्ट्रीय प्रतिज्ञा

अमास्या परिपत्र के बाद दो महत्वपूर्ण कांग्रेस हुईं, जिन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन को एक संवैधानिक आधार प्रदान किया।

· एर्ज़ुरुम कांग्रेस (जुलाई-अगस्त 1919): इस कांग्रेस में पूर्वी अनातोलिया के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। यहाँ यह प्रस्ताव पारित किया गया कि वतन एक अविभाज्य समग्रता है और विदेशी संरक्षण (मैंडेट) स्वीकार नहीं किया जाएगा। मुस्तफ़ा कमाल ने यहाँ कहा, "राष्ट्रीय सीमाओं के भीतर वतन एक अविभाज्य समग्रता है।"
· सिवास कांग्रेस (सितंबर 1919): इसमें पूरे अनातोलिया के प्रतिनिधि शामिल हुए। यहाँ अनातोलिया और रूमेली के अधिकारों की रक्षा समिति (अनादोलु वे रूमेली मुदाफ़ा-ए हुकूक) का गठन किया गया, जिसके अध्यक्ष मुस्तफ़ा कमाल चुने गए। इसने तुर्की राष्ट्रीय आंदोलन को एक सुसंगठित राजनीतिक संस्था में बदल दिया।

3.4 तुर्की की महान राष्ट्रीय सभा (टी.बी.एम.एम.) का उदय

मित्र देशों द्वारा इस्तांबुल सरकार पर दबाव डालकर सेवर की संधि (अगस्त 1920) का प्रारूप तैयार कराया गया, जिसके अनुसार तुर्की को छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँट दिया जाना था। इसी कठिन समय में, 23 अप्रैल 1920 को मुस्तफ़ा कमाल के नेतृत्व में अंकारा में तुर्की की महान राष्ट्रीय सभा का उद्घाटन हुआ। यह सभा स्वयं को तुर्क राष्ट्र की एकमात्र वैध प्रतिनिधि सभा घोषित करती थी। सभा ने एक अस्थायी संविधान (तेशकीलात-ए एसासिये कानूनु) बनाया और मंत्रिपरिषद (इकरा वेकिलेरी हेयेती) का गठन किया, जिसके पहले प्रमुख मुस्तफ़ा कमाल बने। इस प्रकार, अंकारा में एक वैकल्पिक सरकार अस्तित्व में आ गई, जो इस्तांबुल की आत्मसमर्पण करने वाली सरकार के विरुद्ध थी।

3.5 सैन्य संघर्ष: पूर्व, दक्षिण और पश्चिम मोर्चों पर जीत

स्वतंत्रता संग्राम एक साथ कई मोर्चों पर लड़ा गया:

· पूर्वी मोर्चा: काज़िम कराबेकिर पाशा के नेतृत्व में तुर्क सेना ने आर्मेनियाई सेनाओं को पराजित किया और कार्स की संधि (अक्तूबर 1921) के साथ पूर्वी सीमा सुरक्षित कर ली।
· दक्षिणी मोर्चा: फ्रांसीसी सेनाओं के खिलाफ लड़ाई हुई, और गाज़ी अंतिप, उर्फा, मराश के वीरों ने शानदार प्रतिरोध किया (जिसकी तैयारी मुस्तफ़ा कमाल ने यिल्दिरिम सेना के कमांडर रहते हुए ही शुरू कर दी थी)। अंततः फ्रांस के साथ अंकारा समझौता (अक्तूबर 1921) हुआ, और फ्रांसीसी सेनाएँ वापस चली गईं।
· पश्चिमी मोर्चा (यूनान के विरुद्ध): यह सबसे निर्णायक और कठिन लड़ाई थी। यूनानी सेना ब्रिटेन के समर्थन से आगे बढ़ती रही।

3.6 साकार्या का युद्ध और मारेशल गाज़ी की उपाधि

अगस्त 1921 तक यूनानी सेना अंकारा के द्वार तक, साकार्या नदी के पास पहुँच चुकी थी। राष्ट्र संकट में था। 5 अगस्त 1921 को तुर्की की महान राष्ट्रीय सभा ने मुस्तफ़ा कमाल को सेना का प्रधान सेनापति नियुक्त किया। साकार्या का युद्ध (23 अगस्त - 13 सितंबर 1921) 22 दिन-रात तक चला, जिसमें तोपखाने की गोलाबारी कभी नहीं रुकी। मुस्तफ़ा कमाल ने सेना को अपना प्रसिद्ध नारा दिया: "हत रेखा (रक्षा रेखा) नहीं है, सत रेखा (मृत्यु रेखा) है। वह रेखा जो हमारी सुरक्षा के लिए खिंची है, वही हमारी मृत्यु तक का क्षेत्र है।" उन्होंने स्वयं घोड़े से गिरकर पसली की हड्डी तुड़वा ली, फिर भी स्ट्रेचर पर लेटकर युद्ध का नेतृत्व जारी रखा। तुर्क सेना ने अदम्य साहस दिखाया और यूनानी सेना को पीछे धकेल दिया। इस ऐतिहासिक जीत के बाद, 19 सितंबर 1921 को सभा ने मुस्तफ़ा कमाल को "मारेशल" (फ़ील्ड मार्शल) का पद और "गाज़ी" (धर्मयुद्ध का विजेता) की उपाधि प्रदान की।

3.7 बड़ा हमला, स्मिर्ना की मुक्ति और सुल्तानात का अंत

अगस्त 1922 में, मुस्तफ़ा कमाल गाज़ी ने बड़ा हमला (ब्यूक तहरूस) की योजना बनाई। 30 अगस्त 1922 को दुमलूपिनार की लड़ाई में यूनानी सेना की मुख्य टुकड़ी को घेर लिया गया और नष्ट कर दिया गया। तुर्क सेना तेज़ी से आगे बढ़ी और 9 सितंबर 1922 को इज़्मिर (स्मिर्ना) शहर को मुक्त करा लिया। 18 सितंबर 1922 तक अनातोलिया से अंतिम विदेशी सैनिक भी निकाल दिए गए।

इस विजय के बाद, 1 नवंबर 1922 को तुर्की की महान राष्ट्रीय सभा ने एक ऐतिहासिक निर्णय लेकर सुल्तानात की संस्था को समाप्त कर दिया। इस प्रकार 623 वर्षों के उस्मानी शासन का औपचारिक अंत हो गया। अंतिम सुल्तान, मेहमद छठे वहीदुद्दीन, एक ब्रिटिश जहाज़ पर सवार होकर देश छोड़कर भाग गया।

3.8 लौज़ान की संधि और अंतरराष्ट्रीय मान्यता

सेवर की संधि को रद्द कराने और नई तुर्की राज्य की सीमाओं की अंतरराष्ट्रीय मान्यता के लिए लौज़ान, स्विट्ज़रलैंड में एक शांति सम्मेलन हुआ। लौज़ान सम्मेलन में तुर्क प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व इस्मेत पाशा (इनोनु) ने किया। लंबी और कठिन वार्ताओं के बाद, 24 जुलाई 1923 को लौज़ान की संधि पर हस्ताक्षर हुए। इस संधि के तहत:

· तुर्की की वर्तमान सीमाओं (अनातोलिया और पूर्वी थ्रेस सहित) को मान्यता मिली।
· कैपिट्युलेशन (विदेशियों के विशेषाधिकार) पूरी तरह समाप्त कर दिए गए।
· तुर्की पर कोई युद्ध के हर्जाने का बोझ नहीं डाला गया।
· यूनान के साथ जनसंख्या विनिमय (एक्सचेंज ऑफ़ पॉपुलेशन) पर सहमति बनी, जिसके तहत 1.1 मिलियन यूनानी तुर्की से यूनान गए और लगभग 3,80,000 मुसलमान यूनान से तुर्की आए।

लौज़ान की संधि एक सफल राजनयिक विजय थी, जिसने नवजात तुर्की राज्य की पूर्ण स्वतंत्रता और सम्प्रभुता को अंतरराष्ट्रीय कानूनी मान्यता प्रदान की।

भाग 4: तुर्की गणराज्य की स्थापना और अतातुर्क के क्रांतिकारी सुधार

4.1 गणराज्य की घोषणा और अतातुर्क के राष्ट्रपति बनने

लौज़ान की संधि के बाद, राष्ट्रीय संप्रभुता के लिए संघर्ष समाप्त हो चुका था। अब एक नए युग की शुरुआत होनी थी। 29 अक्तूबर 1923 की संध्या को, तुर्की की महान राष्ट्रीय सभा में एक संविधान संशोधन प्रस्तुत किया गया, जिसमें तुर्की राज्य के शासन प्रणाली को "गणराज्य" घोषित किया गया। प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ और "तुर्की गणराज्य" का जन्म हुआ। तत्काल ही सभा ने मुस्तफ़ा कमाल गाज़ी को तुर्की गणराज्य के पहले राष्ट्रपति के रूप में चुना। इस्मेत इनोनु पहले प्रधानमंत्री बने। अंकारा नए राष्ट्र की राजधानी बनी।

4.2 खिलाफ़त का उन्मूलन और धर्मनिरपेक्षता की ओर पहला कदम

गणराज्य की स्थापना के बाद मुस्तफ़ा कमाल ने तुर्की को एक आधुनिक राष्ट्र-राज्य में बदलने के लिए व्यापक और क्रांतिकारी सुधारों की शुरुआत की, जिन्हें "अतातुर्क सुधार" कहा जाता है। इन सुधारों का मूल दर्शन कमालवाद था, जिसके मुख्य स्तंभ गणतंत्रवाद, राष्ट्रवाद, जनवाद, धर्मनिरपेक्षता, वैज्ञानिकता और सुधारवाद थे।

पहला बड़ा कदम धार्मिक और राजनीतिक संस्थाओं को अलग करना था। 3 मार्च 1924 को दो ऐतिहासिक कानून पारित हुए:

1. खिलाफ़त का उन्मूलन: खिलाफ़त (उस्मानी सुल्तानों का इस्लामी नेतृत्व) को समाप्त कर दिया गया और खलीफ़ा तथा उस्मानी परिवार के सदस्यों को देश निकाला दे दिया गया।
2. शिक्षा का एकीकरण (तेव्हीद-ए तेदरिसात कानूनु): देश के सभी शिक्षण संस्थान शिक्षा मंत्रालय के अधीन कर दिए गए। मदरसे बंद कर दिए गए और धार्मिक शिक्षा पर राज्य का नियंत्रण स्थापित हुआ।

इन कदमों ने स्पष्ट कर दिया कि नया तुर्की राज्य धर्मनिरपेक्ष होगा और उसकी नीतियाँ राष्ट्रीय एकता और आधुनिक शिक्षा के सिद्धांत पर आधारित होंगी। अतातुर्क का मानना था कि खिलाफ़त का उन्मूलन इस बात का स्पष्ट संकेत था कि तुर्की "इस्लामी साम्राज्य" की भूमिका को त्याग चुका है।

4.3 कानूनी सुधार: मजल्ला से स्विस नागरिक संहिता तक

उस्मानी काल में न्याय प्रणाली इस्लामी कानून (शरीयत) और पारंपरिक नियम संग्रह "मजल्ला" पर आधारित थी। अतातुर्क ने पूरी कानूनी व्यवस्था को यूरोपीय मॉडल पर बदलने का निर्णय लिया।

- 1926 में तुर्की दंड संहिता इटली के मॉडल पर और तुर्की नागरिक संहिता स्विट्ज़रलैंड के मॉडल पर लागू की गई।
- नागरिक संहिता के लागू होने से बहुविवाह पर प्रतिबंध लग गया, नागरिक विवाह अनिवार्य हो गया, और महिलाओं को पुरुषों के बराबर विवाह, तलाक और संपत्ति के अधिकार मिल गए।
- धार्मिक न्यायालय पूरी तरह बंद कर दिए गए।

यह सुधार न केवल न्याय प्रणाली को आधुनिक बनाने के लिए, बल्कि समाज की मानसिकता को बदलने के लिए भी था। अतातुर्क का कहना था, "हमारा अनुसरण करने वाला सच्चा मार्गदर्शक विज्ञान और तकनीक है।"

4.4 सामाजिक सुधार और महिला अधिकार

अतातुर्क का मानना था कि एक आधुनिक राष्ट्र तभी बन सकता है जब उसका समाज भी आधुनिक हो। इसलिए उन्होंने दैनिक जीवन को प्रभावित करने वाले कई सुधार किए:

· पोशाक सुधार (1925): फ़ेज़ (पारंपरित तुर्की टोपी) पर प्रतिबंध लगा दिया गया और पश्चिमी शैली के हैट और कपड़ों को प्रोत्साहित किया गया। महिलाओं के लिए पर्दा प्रथा को हतोत्साहित किया गया।
· उपनाम कानून (1934): उस्मानी काल में व्यक्ति के नाम के साथ केवल पिता का नाम लगता था। नए कानून के तहत हर परिवार को एक उपनाम अपनाना अनिवार्य कर दिया गया। तुर्की की महान राष्ट्रीय सभा ने मुस्तफ़ा कमाल को "अतातुर्क" (तुर्कों का पिता) उपनाम प्रदान किया।
· महिला अधिकार: अतातुर्क के सुधारों में सबसे प्रगतिशील कदम महिलाओं को अधिकार देना था। 1930 में महिलाओं को स्थानीय चुनावों में वोट देने और चुनाव लड़ने का अधिकार मिला। 1934 में संसदीय चुनावों में वोट देने और चुने जाने का अधिकार मिला। इस प्रकार, तुर्की ने कई यूरोपीय देशों (जैसे फ्रांस, इटली) से भी पहले महिलाओं को पूर्ण राजनीतिक अधिकार दे दिए।

4.5 शिक्षा और भाषा सुधार

अतातुर्क के लिए शिक्षा सभी सुधारों की आधारशिला थी। उनका कहना था, "सबसे अधिक महत्वपूर्ण, सबसे ज़रूरी görev eğitim işidir (कार्य शिक्षा का कार्य है)।"

· नई तुर्की वर्णमाला (1928): अरबी-फ़ारसी लिपि, जो इस्लामी संस्कृति से जुड़ी थी और सीखने में कठिन थी, के स्थान पर लैटिन वर्णमाला पर आधारित नई तुर्की वर्णमाला लागू की गई। स्वयं अतातुर्क ने एक ब्लैकबोर्ड और चॉक लेकर देश भर में घूम-घूम कर नई वर्णमाला सिखाई। इससे साक्षरता दर में तेज़ी से वृद्धि हुई और तुर्की भाषा का आधुनिकीकरण हुआ।
· तुर्की ऐतिहासिक समिति और तुर्की भाषा संस्था की स्थापना (1931-1932): इन संस्थानों का उद्देश्य तुर्की के इतिहास और भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन करना था, ताकि तुर्क राष्ट्र को एक गौरवशाली प्रागैतिहासिक और प्राचीन पृष्ठभूमि प्रदान की जा सके और भाषा से अरबी-फ़ारसी के अवांछित शब्दों को हटाकर उसे शुद्ध करने का प्रयास किया जा सके।
· इल्क मेकतप (प्राथमिक शिक्षा) को निःशुल्क और अनिवार्य बनाया गया। पूरे देश में नए स्कूलों और शिक्षण संस्थानों का निर्माण किया गया।

4.6 आर्थिक सुधार: "राज्यवाद" (एटाटिज़्म) की नीति

राजनीतिक और सामाजिक सुधारों के साथ-साथ अतातुर्क ने आर्थिक आत्मनिर्भरता पर भी ज़ोर दिया। उन्होंने मिश्रित अर्थव्यवस्था का मॉडल अपनाया, जिसे "राज्यवाद" कहा गया। इस नीति के तहत:

· कृषि को आधुनिक बनाने के लिए उन्नत बीज, कृषि यंत्र और ऋण सुविधाएँ प्रदान की गईं। किसानों पर से भारी करों का बोझ कम किया गया।
· औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देने के लिए पंचवर्षीय योजनाएँ बनाई गईं। सूती कपड़ा, लोहा-इस्पात, काग़ज़, चीनी जैसे भारी उद्योग राज्य के स्वामित्व में स्थापित किए गए।
· अवसंरचना विकास पर विशेष ध्यान दिया गया। हज़ारों किलोमीटर नई रेलवे लाइनें (अंकारा-सिवास, अंकारा-इस्तांबुल) बिछाई गईं, जिससे देश के भीतरी हिस्से तटीय क्षेत्रों से जुड़े।
· विदेशी कंपनियों द्वारा संचालित रेलवे और उद्योगों का राष्ट्रीयकरण किया गया।

अतातुर्क का लक्ष्य था कि तुर्की विदेशी आर्थिक नियंत्रण से पूरी तरह मुक्त होकर एक स्वावलंबी अर्थव्यवस्था की स्थापना करे।

4.7 विदेश नीति: "दुनिया में शांति, देश में शांति"

अतातुर्क की विदेश नीति का आधार यथार्थवाद और शांति था। उनका प्रसिद्ध सिद्धांत था: "युर्त्ता सुल्ह, चिहान्दा सुल्ह" (दुनिया में शांति, देश में शांति)। वह नव-स्वतंत्र तुर्की को बाहय संघर्षों में नहीं उलझाना चाहते थे। उन्होंने पड़ोसी देशों के साथ मित्रतापूर्ण संबंध स्थापित किए:

· 1934 में बाल्कन समझौता: यूनान, रोमानिया, यूगोस्लाविया के साथ एक गैर-आक्रामकता समझौता, जिससे क्षेत्र में स्थिरता आई।
· 1937 में सादाबाद समझौता: ईरान, इराक और अफ़गानिस्तान के साथ सुरक्षा समझौता।

अतातुर्क ने तुर्की को पश्चिमी दुनिया के साथ जोड़ने का भी प्रयास किया और लीग ऑफ़ नेशंस जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों में सक्रिय भागीदारी निभाई।

भाग 5: विरासत और निष्कर्ष

5.1 अंतिम वर्ष और निधन

कठिन संघर्ष, अथक परिश्रम और भारी जिम्मेदारियों ने अतातुर्क के स्वास्थ्य पर प्रभाव डाला। उन्हें यकृत की सिरोसिस बीमारी हुई। लंबी बीमारी के बाद, 10 नवंबर 1938, सुबह 9 बजकर 5 मिनट पर इस्तांबुल के दोलमाबाहचे सराय में उनका निधन हो गया। सम्पूर्ण राष्ट्र शोक में डूब गया। उनके निधन के बाद इस्मेत इनोनु दूसरे राष्ट्रपति बने।

5.2 अतातुर्क की विरासत और आधुनिक तुर्की के लिए अर्थ

मुस्तफ़ा कमाल अतातुर्क का जीवन और कार्य न केवल तुर्की के लिए, बल्कि समस्त उपनिवेशवाद-विरोधी संघर्ष करने वाले राष्ट्रों के लिए एक प्रेरणा स्रोत बन गया। भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री सुचेता कृपलानी ने कहा था, "अतातुर्क केवल तुर्क राष्ट्र के ही नहीं, बल्कि स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने वाले सभी राष्ट्रों के नेता थे।"

उन्होंने एक साम्राज्य के खंडहरों से एक आधुनिक राष्ट्र-राज्य का निर्माण किया। उनके सुधारों ने तुर्की समाज के हर पहलू — राजनीति, कानून, शिक्षा, अर्थव्यवस्था और सामाजिक जीवन — को बदल दिया। उन्होंने धर्मनिरपेक्षता की नींव रखी, महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया और विज्ञान व तर्क को समाज का मार्गदर्शक सिद्धांत बनाया।

आज, तुर्की गणराज्य एक महत्वपूर्ण क्षेत्रीय शक्ति है और अतातुर्क के सिद्धांत (कमालवाद) देश की राजनीति और समाज के लिए मौलिक संदर्भ बिंदु बने हुए हैं। उनकी प्रतिमाएँ, उनके कथन और उनकी यादें तुर्की के जन-जन के हृदय में रची-बसी हैं।

उस्मानी साम्राज्य के पतन और आधुनिक तुर्की के उदय की गाथा परिवर्तन, साहस और पुनर्जन्म की गाथा है। यह एक ऐसे नेता की कहानी है जिसने असंभव को संभव किया: एक पराजित, विभाजित और कब्ज़े वाले देश को एकजुट किया, विदेशी सेनाओं को परास्त किया, और फिर उसी जमीन पर एक नए, गर्वीले और प्रगतिशील राष्ट्र

की नींव रखी। मुस्तफ़ा कमाल अतातुर्क न केवल तुर्की के, बल्कि विश्व इतिहास के सबसे महान राष्ट्र निर्माताओं में से एक हैं। उनका यह कथन उनके सम्पूर्ण जीवन दर्शन को सारगर्भित करता है: "सबसे बड़ा सच्चा मार्गदर्शक विज्ञान है।" और यही विज्ञान और आधुनिकता का मार्ग उन्होंने अपने राष्ट्र के लिए चुना, जिस पर चलकर तुर्की गणराज्य ने अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई।